



天津市古籍书店

責任編輯 許大年

重訂六書通

出版者 天津市古籍書店

(烟臺道十五號)

發行者 新華書店天津發行所

印刷者 天津市建新印刷廠

一九九二年八月第一版

一九九二年八月第一次印刷

開本 787×1092 毫米 1/32

印張 13.125

津新出圖字(91)第001436號

定價: 6.80 元

大書通爲五湖閔富五先生稟本余得之苕谿程子夫文家先生集三代秦漢篆法其體以說文字爲標首下別古文籀文以及鼎彝符印有變體必載使觀者知異全得其變與通也而又繼之以附通附通者如東字之後附之以凍先字之後附之以姓東先具各變體加水加女則凍變也然即東先之變衆之已水女亦不可謂無本也附之以不變通之以篆不可變義精而體詳有功後學不淺惜殘闕且淹漫而不復傳余爲之討求數載增補篆訂爲成書同學諸公爲之衆訂相與贊成綴梓人諸公好古如斯也先生學古之學不淹漫而果傳說文一書爲三代已來古本自不待言如元周伯琦著說文字原楊升菴說之然自不夫爲好古之士升菴爲索隱祖說文而加詳吳若金石韻府正韻傳體例與是編迥而是編更加詳矣於戲自秦火而後古學論以不可復見學者莫不識一字曰流變于下不復窮變于上而學術之衰也可勝言哉揚升庵曰秦之吏人猶誦爰鹿游喜蕩冉童子無不通急就凡將後漢許慎著說文軒庸之迹猶有存者若程元峯之緣史游之章鍾繇之行楷出而字曰訛頭豎王著五藏以楷書寫籀古十訛九矣元黃芩曰文字之變自龍穗而熨篆而科斗而大小篆而八分而隸而行州率

皆各難即易厥詳就省而在道升降淳漓之象見矣周伯琦曰漢興儒
者各以所記者相授受類多躋駁又曰漢制學僉十七以上始試詠
誦描書九千字乃得為吏又以八體試之郡移本史并課最者召為尚
書史書或不正輒舉劾之故還固之書字頗近古六經皆古文唐天寶
三季詔彙賢學士漸包攷古文更作楷書以便習讀今世所傳並信體
矣於戲六書之季焚于秦壞于漢絕于唐世愈變而愈下詎窮其變于
上而通之于古則興蜀學于既亡也蓋吳難哉先生自叙曰通者何通
六書之變也孰通之通說文解字之執也岫巖公倉史未遠而變世與
世禪字亦與字禪而變又曰使天不生倉史是無藝皇使霖後世之變
是無倉史先生既已拊重為倉史珍臣又通乎拊重之執乃真見倉史
矣夫在通窮于變則必返乎盛是非盛世同文之應而軒周復見哉學
者和窮變于上而通焉又何疑矣余又焉辭夫倥陋而不為之增訂以
公諸同好哉

康熙五十九年歲次庚子清和之望

海鹽畢弘述既明氏識



六書通者何通六書之變也孰通之通說文解字之執也殊重為蒼史功臣蒼史之道千古不墜者殊重之力也第謂字當止於說文之文而餘皆棄而不錄則非蒼史之意矣亦非天地鬼神之意矣昔蒼史氏創為五百四十字天兩粟而鬼夜失何為者以為五百四十字之變將不可勝窮必且十三經必且廿一史必且諸子百家必且篆隸真草賞天地之化棄鬼神之靈於是焉在夫是以天為之瑞而鬼以之感也不然五百四十字耳且不足以適於用其能動天地鬼神耶今觀岫嶠片石其文皆說文之字也而字非說文也其略同於說文者十許字耳計其事當在舜相堯之日於時去蒼史未遠而其變已如斯矣降而夏商周而列國而秦漢不知其幾岫嶠也其為變可勝言耶蓋世與世禪字亦與字禪不有損益不足以成其禪於焉而各是其是各非其非可曰蒼史是而岫嶠非乎記曰書同文同也者異也同乎昭代正其異於前代也是故一代之同文即為一代之變體變々相尋充塞宇宙而五百四十字者方新而未艾也故曰賞天地棄鬼神者存乎變或曰羲皇之畫在書契先矣其

猶未足以動天神耶曰兩儀初闢五行之遞生也不壹而足天
一生水必待地六以成之文明之肇開也亦不壹而足羲之畫
而不字猶天之水而不成也不字則不辭不辭則何以前民用
故羲之畫必待蒼之字而後成也使天不生蒼史是無羲皇使
蒼史而無後世之變亦無蒼史若是乎變之不可以不通也
順治辛丑仲冬五湖閔齊伋寓

五父記時年八十有二

文從字出者也故韓子有言為文須先多識字不審則義不明文安
從生古人以六書之道製字一點一畫各有義存焉此天地之文也
余少讀鄭氏通志六書略歎其持論精審以為通是說者可以析
字學之精微揭古人之祕奧顧六書遺意傳于篆籀而今之楷書
已盡失其藩六書之義往矣艱難而不能盡通且古字之廢既久
周秦形製時人已不能多見矣亦不能盡識也況能溯厥淵源尋
蒼史之蘊迹而心知其故哉嗟乎字學日遠則六書幾熄古人創
制之精心已久沉晦於天下余嘗思集三古篆籀遺文別源流審
因異詮比以六書之法以附於鄭氏之末俾有志古學者得觀古
人之字以知古人之意顧金石散缺聚集為難且卒矣未暇也此
畢子既明過余言一編相示曰此吳興閻寓五先生所詮次六書
通也余讀其五例以韻為序先標楷書而篆法之意以次徐比源
流異同鑿了精晰不禁躍然以為先得我心蓋其用心實勤而嘉
惠後學為不淺矣既明謀授梓人以公同好嗚呼以先生用心之
勤且久如此而六書之學之沉晦而不明如此凡有心者其忍令
蒼華之墜于地而不一傳之耶余以官薄不能獨任其事而准之

南北率多振古好奇之士余為慙慙而成此舉行見是書一出流傳日廣古人六書之微旨煥然復昭於天下實稽古者之一快也余聞閩先生為學貧老既沒而其書流落人間數十年後乃得既明表章相與謀為是舉夫世間奇書知復何限不幸遇非其人而零落于破窳敗肆間僅以為覆醬甌易餅餌之具者何可勝惜而既明乃能增篆考訂壽諸不朽豈非幸哉然則今日緣成既明之志而表章是書者謂其功不在閩君下可也

康熙五十九年歲次庚子四月

之望襄平張涵題



凡著書可傳者皆有得於天得於天故終不泯古賢傑所著書往々沉埋播棄積歲月勢且銷亡不傳而卒傳者其精神與天昭合天則不忍啗之者也韓愈文唐人大小佐之越數百年歐陽脩蘇洵父子扶其業於殘牘敗紙間而推以為起衰之作司馬遷史記魏晉名賢槩置弗重及徐廣考異同作音義裴駙作集解而史記行於世甚者詩書易春秋三禮及孔曾孟諸書俱為餘燼而數百年後復炳然出於人間非天不忍啗斯文也歟而後之名賢可無懼焉矣歲溪閣寓五先生好古讀書生明季能遠紹倉頡微旨於三代秦漢諸篆法遐搜備其形體窮計邇其本原泰互辨其疑似勞精竭神者五十餘年輯成書題曰六書通而先生老死是書流傳散失幾付之荒烟而又六十餘年燁得之燁交于畢殿揚先生先生弟既明先生工文詞善書尤精篆籀諸法余曰殿揚先生以六書通請正為先生一見驚絕謂周秦古法復見于今惜殘闕非全書且傷其幾于泯滅也為之加叅考篆訂閱四載書成且付之梓人以傳于後嗚呼兩先生學同也攻苦同也前後相聞六七十年而共成是書非天之不忍啗之哉又非特歐蘇之於昌黎徐裴之於龍門矣余感其精神與天有脗合故為之叙以記其異焉

康熙康子清和月穀旦若溪程焯赤文氏識



凡例

一是書以通為義凡說文之一字而重文如蕙風者及他書之變乎說文如冬籀徒來切者與夫楷書止一字而說文二三見如彤徒冬切詆徒禮切者皆所編錄如止單文無變者附於得變者之尾曰附通建首之字雖單文必錄

一古籀鼎彝之文速者數千年近不下千餘年傳摹不知幾更手其能無少異乎諸編方駕或連或斷或屈或伸或左或右或增或減除灼然乖悖者芟之稍涉疑似安知古人之不出於疑似也理當並存以俟千古

一凡俗書如忽雍等字說文所無而間以冠於楷書之前便查閱也

一秦漢印章皆古人精神所寄不但運刀之法後人難到即其章法如雲蒸霞蔚不可端倪可以其繆篆也而置諸乎前代名賢雖別有籀錄是仍繆篆目之謂資摹刻之用耳安在金石之必不可通於簡冊耶茲特併而一之以不負作者之意

一凡楷書只一字而篆書兩文兩義如卦變之𠄎變亂之𠄎糜粥之糜糜爛之糜理當各為一行但以楷無異文姑因音同而合為一注中不得不存其義然古人混用久矣如楷雖無異文而音不同如燕雀之燕與燕趙之燕參差之差與差誤之差音既不同篆文各別故有一楷而兩見者非犯重也

一鐘鼎文作者自有取義十九不可強解此理在六書之外不必為之說

一九折文止作官印近世之同文也秩宗自有書茲不贊

一字之次序依正韻一字或二三音至五七音者止見於一韻以說文為主

一古無其法以意損益之離合之屈伸之謂之杜撰是誠不可若古有其偏旁而移彼合此亦猶夫古耳兩旁相配如八卦之遞兼所增字不啻千萬矣是又附通之所推變不能盡載學人參究焉可也

同人姓氏

程 稱馨九

程國者 霞起

程 慶 且頌

曹 洽 濬友

程 竣 春谷

程文階 羽格

程 翕 起純

程 璣 若谷

程 鏊 未夫

程夢鷗 且函

程光奎 斗文

程名琦 偉士

程鳳文 翼書

曹 榴 有壽

程振箕 澤弓

程嘉萊 北山

孫志韓 獻山

王元俊 崇士



𠄎	𠄏	𠄐	𠄑	𠄒	𠄓	𠄔	𠄕	𠄖	𠄗	𠄘	𠄙	𠄚	𠄛	𠄜	𠄝	𠄞	𠄟	𠄠	𠄡	𠄢	𠄣	𠄤	𠄥	𠄦	𠄧	𠄨	𠄩	𠄪	𠄫	𠄬	𠄭	𠄮	𠄯	𠄰	𠄱	𠄲	𠄳	𠄴	𠄵	𠄶	𠄷	𠄸	𠄹	𠄺	𠄻	𠄼	𠄽	𠄾	𠄿	𠅀	𠅁	𠅂	𠅃	𠅄	𠅅	𠅆	𠅇	𠅈	𠅉	𠅊	𠅋	𠅌	𠅍	𠅎	𠅏	𠅐	𠅑	𠅒	𠅓	𠅔	𠅕	𠅖	𠅗	𠅘	𠅙	𠅚	𠅛	𠅜	𠅝	𠅞	𠅟	𠅠	𠅡	𠅢	𠅣	𠅤	𠅥	𠅦	𠅧	𠅨	𠅩	𠅪	𠅫	𠅬	𠅭	𠅮	𠅯	𠅰	𠅱	𠅲	𠅳	𠅴	𠅵	𠅶	𠅷	𠅸	𠅹	𠅺	𠅻	𠅼	𠅽	𠅾	𠅿	𠆀	𠆁	𠆂	𠆃	𠆄	𠆅	𠆆	𠆇	𠆈	𠆉	𠆊	𠆋	𠆌	𠆍	𠆎	𠆏	𠆐	𠆑	𠆒	𠆓	𠆔	𠆕	𠆖	𠆗	𠆘	𠆙	𠆚	𠆛	𠆜	𠆝	𠆞	𠆟	𠆠	𠆡	𠆢	𠆣	𠆤	𠆥	𠆦	𠆧	𠆨	𠆩	𠆪	𠆫	𠆬	𠆭	𠆮	𠆯	𠆰	𠆱	𠆲	𠆳	𠆴	𠆵	𠆶	𠆷	𠆸	𠆹	𠆺	𠆻	𠆼	𠆽	𠆾	𠆿	𠇀	𠇁	𠇂	𠇃	𠇄	𠇅	𠇆	𠇇	𠇈	𠇉	𠇊	𠇋	𠇌	𠇍	𠇎	𠇏	𠇐	𠇑	𠇒	𠇓	𠇔	𠇕	𠇖	𠇗	𠇘	𠇙	𠇚	𠇛	𠇜	𠇝	𠇞	𠇟	𠇠	𠇡	𠇢	𠇣	𠇤	𠇥	𠇦	𠇧	𠇨	𠇩	𠇪	𠇫	𠇬	𠇭	𠇮	𠇯	𠇰	𠇱	𠇲	𠇳	𠇴	𠇵	𠇶	𠇷	𠇸	𠇹	𠇺	𠇻	𠇼	𠇽	𠇾	𠇿	𠈀	𠈁	𠈂	𠈃	𠈄	𠈅	𠈆	𠈇	𠈈	𠈉	𠈊	𠈋	𠈌	𠈍	𠈎	𠈏	𠈐	𠈑	𠈒	𠈓	𠈔	𠈕	𠈖	𠈗	𠈘	𠈙	𠈚	𠈛	𠈜	𠈝	𠈞	𠈟	𠈠	𠈡	𠈢	𠈣	𠈤	𠈥	𠈦	𠈧	𠈨	𠈩	𠈪	𠈫	𠈬	𠈭	𠈮	𠈯	𠈰	𠈱	𠈲	𠈳	𠈴	𠈵	𠈶	𠈷	𠈸	𠈹	𠈺	𠈻	𠈼	𠈽	𠈾	𠈿	𠉀	𠉁	𠉂	𠉃	𠉄	𠉅	𠉆	𠉇	𠉈	𠉉	𠉊	𠉋	𠉌	𠉍	𠉎	𠉏	𠉐	𠉑	𠉒	𠉓	𠉔	𠉕	𠉖	𠉗	𠉘	𠉙	𠉚	𠉛	𠉜	𠉝	𠉞	𠉟	𠉠	𠉡	𠉢	𠉣	𠉤	𠉥	𠉦	𠉧	𠉨	𠉩	𠉪	𠉫	𠉬	𠉭	𠉮	𠉯	𠉰	𠉱	𠉲	𠉳	𠉴	𠉵	𠉶	𠉷	𠉸	𠉹	𠉺	𠉻	𠉼	𠉽	𠉾	𠉿	𠊀	𠊁	𠊂	𠊃	𠊄	𠊅	𠊆	𠊇	𠊈	𠊉	𠊊	𠊋	𠊌	𠊍	𠊎	𠊏	𠊐	𠊑	𠊒	𠊓	𠊔	𠊕	𠊖	𠊗	𠊘	𠊙	𠊚	𠊛	𠊜	𠊝	𠊞	𠊟	𠊠	𠊡	𠊢	𠊣	𠊤	𠊥	𠊦	𠊧	𠊨	𠊩	𠊪	𠊫	𠊬	𠊭	𠊮	𠊯	𠊰	𠊱	𠊲	𠊳	𠊴	𠊵	𠊶	𠊷	𠊸	𠊹	𠊺	𠊻	𠊼	𠊽	𠊾	𠊿	𠋀	𠋁	𠋂	𠋃	𠋄	𠋅	𠋆	𠋇	𠋈	𠋉	𠋊	𠋋	𠋌	𠋍	𠋎	𠋏	𠋐	𠋑	𠋒	𠋓	𠋔	𠋕	𠋖	𠋗	𠋘	𠋙	𠋚	𠋛	𠋜	𠋝	𠋞	𠋟	𠋠	𠋡	𠋢	𠋣	𠋤	𠋥	𠋦	𠋧	𠋨	𠋩	𠋪	𠋫	𠋬	𠋭	𠋮	𠋯	𠋰	𠋱	𠋲	𠋳	𠋴	𠋵	𠋶	𠋷	𠋸	𠋹	𠋺	𠋻	𠋼	𠋽	𠋾	𠋿	𠌀	𠌁	𠌂	𠌃	𠌄	𠌅	𠌆	𠌇	𠌈	𠌉	𠌊	𠌋	𠌌	𠌍	𠌎	𠌏	𠌐	𠌑	𠌒	𠌓	𠌔	𠌕	𠌖	𠌗	𠌘	𠌙	𠌚	𠌛	𠌜	𠌝	𠌞	𠌟	𠌠	𠌡	𠌢	𠌣	𠌤	𠌥	𠌦	𠌧	𠌨	𠌩	𠌪	𠌫	𠌬	𠌭	𠌮	𠌯	𠌰	𠌱	𠌲	𠌳	𠌴	𠌵	𠌶	𠌷	𠌸	𠌹	𠌺	𠌻	𠌼	𠌽	𠌾	𠌿	𠍀	𠍁	𠍂	𠍃	𠍄	𠍅	𠍆	𠍇	𠍈	𠍉	𠍊	𠍋	𠍌	𠍍	𠍎	𠍏	𠍐	𠍑	𠍒	𠍓	𠍔	𠍕	𠍖	𠍗	𠍘	𠍙	𠍚	𠍛	𠍜	𠍝	𠍞	𠍟	𠍠	𠍡	𠍢	𠍣	𠍤	𠍥	𠍦	𠍧	𠍨	𠍩	𠍪	𠍫	𠍬	𠍭	𠍮	𠍯	𠍰	𠍱	𠍲	𠍳	𠍴	𠍵	𠍶	𠍷	𠍸	𠍹	𠍺	𠍻	𠍼	𠍽	𠍾	𠍿	𠎀	𠎁	𠎂	𠎃	𠎄	𠎅	𠎆	𠎇	𠎈	𠎉	𠎊	𠎋	𠎌	𠎍	𠎎	𠎏	𠎐	𠎑	𠎒	𠎓	𠎔	𠎕	𠎖	𠎗	𠎘	𠎙	𠎚	𠎛	𠎜	𠎝	𠎞	𠎟	𠎠	𠎡	𠎢	𠎣	𠎤	𠎥	𠎦	𠎧	𠎨	𠎩	𠎪	𠎫	𠎬	𠎭	𠎮	𠎯	𠎰	𠎱	𠎲	𠎳	𠎴	𠎵	𠎶	𠎷	𠎸	𠎹	𠎺	𠎻	𠎼	𠎽	𠎾	𠎿	𠏀	𠏁	𠏂	𠏃	𠏄	𠏅	𠏆	𠏇	𠏈	𠏉	𠏊	𠏋	𠏌	𠏍	𠏎	𠏏	𠏐	𠏑	𠏒	𠏓	𠏔	𠏕	𠏖	𠏗	𠏘	𠏙	𠏚	𠏛	𠏜	𠏝	𠏞	𠏟	𠏠	𠏡	𠏢	𠏣	𠏤	𠏥	𠏦	𠏧	𠏨	𠏩	𠏪	𠏫	𠏬	𠏭	𠏮	𠏯	𠏰	𠏱	𠏲	𠏳	𠏴	𠏵	𠏶	𠏷	𠏸	𠏹	𠏺	𠏻	𠏼	𠏽	𠏾	𠏿	�0	�1	�2	�3	�4	�5	�6	�7	�8	�9	𠐊	𠐋	𠐌	𠐍	𠐎	𠐏	𠐐	𠐑	𠐒	𠐓	𠐔	𠐕	𠐖	𠐗	𠐘	𠐙	𠐚	𠐛	𠐜	𠐝	𠐞	𠐟	𠐠	𠐡	𠐢	𠐣	𠐤	𠐥	𠐦	𠐧	𠐨	𠐩	𠐪	𠐫	𠐬	𠐭	𠐮	𠐯	𠐰	𠐱	𠐲	𠐳	𠐴	𠐵	𠐶	𠐷	𠐸	𠐹	𠐺	𠐻	𠐼	𠐽	𠐾	𠐿	�0	�1	�2	�3	�4	�5	�6	�7	�8	�9	𠑊	𠑋	𠑌	𠑍	𠑎	𠑏	𠑐	𠑑	𠑒	𠑓	𠑔	𠑕	𠑖	𠑗	𠑘	𠑙	𠑚	𠑛	𠑜	𠑝	𠑞	𠑟	𠑠	𠑡	𠑢	𠑣	𠑤	𠑥	𠑦	𠑧	𠑨	𠑩	𠑪	𠑫	𠑬	𠑭	𠑮	𠑯	𠑰	𠑱	𠑲	𠑳	𠑴	𠑵	𠑶	𠑷	𠑸	𠑹	𠑺	𠑻	𠑼	𠑽	𠑾	𠑿	𠒀	𠒁	𠒂	𠒃	𠒄	𠒅	𠒆	𠒇	𠒈	𠒉	𠒊	𠒋	𠒌	𠒍	𠒎	𠒏	𠒐	𠒑	𠒒	𠒓	𠒔	𠒕	𠒖	𠒗	𠒘	𠒙	𠒚	𠒛	𠒜	𠒝	𠒞	𠒟	𠒠	𠒡	𠒢	𠒣	𠒤	𠒥	𠒦	𠒧	𠒨	𠒩	𠒪	𠒫	𠒬	𠒭	𠒮	𠒯	𠒰	𠒱	𠒲	𠒳	𠒴	𠒵	𠒶	𠒷	𠒸	𠒹	𠒺	𠒻	𠒼	𠒽	𠒾	𠒿	𠓀	𠓁	𠓂	𠓃	𠓄	𠓅	𠓆	𠓇	𠓈	𠓉	𠓊	𠓋	𠓌	𠓍	𠓎	𠓏	𠓐	𠓑	𠓒	𠓓	𠓔	𠓕	𠓖	𠓗	𠓘	𠓙	𠓚	𠓛	𠓜	𠓝	𠓞	𠓟	𠓠	𠓡	𠓢	𠓣	𠓤	𠓥	𠓦	𠓧	𠓨	𠓩	𠓪	𠓫	𠓬	𠓭	𠓮	𠓯	𠓰	𠓱	𠓲	𠓳	𠓴	𠓵	𠓶	𠓷	𠓸	𠓹	𠓺	𠓻	𠓼	𠓽	𠓾	𠓿	𠔀	𠔁	𠔂	𠔃	𠔄	𠔅	𠔆	𠔇	𠔈	𠔉	𠔊	𠔋	𠔌	𠔍	𠔎	𠔏	𠔐	𠔑	𠔒	𠔓	𠔔	𠔕	𠔖	𠔗	𠔘	𠔙	𠔚	𠔛	𠔜	𠔝	𠔞	𠔟	𠔠	𠔡	𠔢	𠔣	𠔤	𠔥	𠔦	𠔧	𠔨	𠔩	𠔪	𠔫	𠔬	𠔭	𠔮	𠔯	𠔰	𠔱	𠔲	𠔳	𠔴	𠔵	𠔶	𠔷	𠔸	𠔹	𠔺	𠔻	𠔼	𠔽	𠔾	𠔿	𠕀	𠕁	𠕂	𠕃	𠕄	𠕅	𠕆	𠕇	𠕈	𠕉	𠕊	𠕋	𠕌	𠕍	𠕎	𠕏	𠕐	𠕑	𠕒	𠕓	𠕔	𠕕	𠕖	𠕗	𠕘	𠕙	𠕚	𠕛	𠕜	𠕝	𠕞	𠕟	𠕠	𠕡	𠕢	𠕣	𠕤	𠕥	𠕦	𠕧	𠕨	𠕩	𠕪	𠕫	𠕬	𠕭	𠕮	𠕯	𠕰	𠕱	𠕲	𠕳	𠕴	𠕵	𠕶	𠕷	𠕸	𠕹	𠕺	𠕻	𠕼	𠕽	𠕾	𠕿	�0	�1	�2	�3	�4	�5	�6	�7	�8	�9	𠖊	𠖋	𠖌	𠖍	𠖎	𠖏	𠖐	𠖑	𠖒	𠖓	𠖔	𠖕	𠖖	𠖗	𠖘	𠖙	𠖚	𠖛	𠖜	𠖝	𠖞	𠖟	𠖠	𠖡	𠖢	𠖣	𠖤	𠖥	𠖦	𠖧	𠖨	𠖩	𠖪	𠖫	𠖬	𠖭	𠖮	𠖯	𠖰	𠖱	𠖲	𠖳	𠖴	𠖵	𠖶	𠖷	𠖸	𠖹	𠖺	𠖻	𠖼	𠖽	𠖾	𠖿	�0	�1	�2	�3	�4	�5	�6	�7	�8	�9	𠗊	𠗋	𠗌	𠗍	𠗎	𠗏	𠗐	𠗑	𠗒	𠗓	𠗔	𠗕	𠗖	𠗗	𠗘	𠗙	𠗚	𠗛	
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	--

《重訂六書通》

檢字表

沐霖

編

說明

一、本檢字表包括《重訂六書通》所有單字五千五百餘個。
二、本檢字表採用部首分類法。部首與一般字典基本相同，略有改併，共有一百八十六部。

三、部首次序按部首筆畫數目多少排列。同一部的字按除去部首筆畫以外的畫數排列。

四、有些字分收在幾個部首內，如「晨」歸「日」部，「辰」歸「辰」部，「衣」歸「衣」部。
五、有些字難以歸入現有的部首中，如「乚」歸「丨」部，「彡」歸「彡」部，「彡」按起筆歸「丨」部，「彡」歸「彡」部，「白」部，「人」則歸「乙」部。

六、本書字多異體，為便於檢索，以三畫計，並改成「彡」，有些「彡」按習慣寫成「彡」，其餘則盡量以原字形為準。